

विष्ठा प्रत्यारोपण के मापदंडों का विकास

यह सुनकर हैरत हो सकती है कि आजकल कई डॉक्टर्स कुछ रोगों के इलाज के लिए विष्ठा यानी मल के प्रत्यारोपण का सहारा लेते हैं। इसका मतलब है कि विष्ठा का पतला घोल एक नली की मदद से मनुष्य की आंतों में पहुंचाया जाता है।

वैसे तो डॉक्टर्स इस तरीके का उपयोग कई दशकों से करते आए हैं मगर हाल में इस तकनीक का काफी दस्तावेजीकरण हुआ है और अब यूएसए का खाद्य व औषधि प्रशासन इसके नियमन की दिशा में सोचने लगा है।

यह तो जानी-मानी बात है कि मनुष्य के शरीर में सूक्ष्मजीवों का वास होता है। खास तौर से हमारी आंतों में तरह-तरह के अरबों सूक्ष्मजीव निवास करते हैं। इनके संघटन व गुणवत्ता का असर हमारी सेहत पर पड़ता है। यदि गलत किस्म के सूक्ष्मजीव हमारी आंतों के मेज़बान बन जाएं तो मुश्किल हो जाती है। तब किसी अन्य व्यक्ति के सूक्ष्मजीव हमारे शरीर में पहुंचाने से मदद मिलती है। जैसे जीर्ण दस्त के रोगियों में यह तरीका काफी कारगर पाया गया है। हाल में ऑटिज़्म वगैरह में भी इसका असर देखा गया है।

मगर दिक्कत यह रही है कि हरेक डॉक्टर विष्ठा प्रत्यारोपण का अपना प्रोटोकॉल तय करता है। हाल ही में यूएस नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ द्वारा आयोजित एक

कार्यशाला में पहली बार इस पर सार्वजनिक चर्चा हुई और खाद्य व औषधि प्रशासन ने यह स्पष्ट किया कि वह इस तकनीक के नियमन के संदर्भ में भी अधिकार रखता है। इस कार्यशाला में प्रशासन ने उजागर किया कि निजी तौर पर डॉक्टर्स उससे अनुमति लेकर विष्ठा प्रत्यारोपण करते रहे हैं। और अब वह नियमन के इस कार्य को व्यवस्थित रूप देने जा रहा है।

इससे एक फायदा तो यह होगा कि विष्ठा प्रत्यारोपण के मामले में कुछ सामान्य मापदंड विकसित हो पाएंगे। हालांकि उसमें अभी बरसों लग सकते हैं मगर इस कार्यशाला ने शोधकर्ताओं के बीच एक बहस तो शुरू कर ही दी है कि विष्ठा प्रत्यारोपण के लिए विष्ठा की जांच, छंटाई, प्रोसेसिंग वगैरह कैसे किए जाएं और इन्हें शरीर में पहुंचाने की सर्वोत्तम विधि क्या होगी।

वैसे अभी तक स्थिति यह है कि मात्र एक रोग के मामले में विष्ठा प्रत्यारोपण तकनीक की सफलता स्थापित हुई है। एक बैक्टीरिया *क्लोस्ट्रिडियम डिफिसाइल* की वजह से होने वाले दस्त के मामलों में यह विधि कारगर पाई गई है। खास तौर से दवा-प्रतिरोधी किस्म के *डीफिसाइल* के मामले में तो यह बहुत सफल रही है। तो उम्मीद की जानी चाहिए कि अब विष्ठा प्रत्यारोपण को लेकर व्यवस्थित अनुसंधान शुरू होगा। (स्रोत फीचर्स)